ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - III July - September - 2018

English Part - IV / Hindi Part - III

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	भोजपुरी कवि घाघ का लोक - जीवन **डॉ.लियाकत मियाभाई शेख**	१-४
२	सामाजिक एकता का प्रतीक : 'आधा गांव' **प्रा. डॉ. शेख मुख्त्यार शेख वहाब**	५-९
३	आदिवासी वर्ग के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र - छात्राओं की सृजनात्मक का तुलनात्मक अध्ययन **राजेश कुमार**	१०-१४
४	मूस्लीम अल्पसंख्याक राष्ट्रवाद और आतंकवाद **पाटील प्रणिता लक्ष्मणराव**	१५-२०
५	समकालीन महिला कहानिकारों के कहानियों में स्त्री **डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर**	२१-२३
६	हिंदी साहित्येतिहास लेखन सिद्धांत एवं परंपरा **प्रा. डॉ. प्रतिभा रंगनाथराव धारासूरकर (पिलखाने)**	२४-२७
७	समकालीन ग्रामीण जीवन : गांधीजी के विचार **डॉ. चावडा रंजना यदुनंदन**	२८-३२
८	महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सृजनयात्रा **प्रा.डॉ. रवींद्र भोरे**	३३-३६
९	ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त केदारनाथ सिंह का साहित्यिक योगदान **डॉ. भगवान पी. कांबळे**	३७-४०

Govt. College of Arts & Science ★ Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

९. ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त केदारनाथ सिंह का साहित्यिक योगदान

डॉ. भगवान पी. कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद.

सारांश

"२२ मई १९६१ को भारतीय ज्ञानपीठ के संस्थापक श्री.साहू शांति प्रसाद जैन के ५० वे जन्म दिवस के अवसर पर उनके परिवार के सदस्यों के मन में यह विचार आया कि , साहित्यिक या सांस्कृतिक क्षेत्र में कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य किया जाए जो राष्ट्रीय गौरव तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिमान के अनुरुप हो। १६ सितम्बर १९६१ को भारतीय ज्ञानपीठ की संस्थापक अध्यक्ष श्रीमती.रमा जैन ने न्यास की एक गोष्ठी में इस पुरस्कार का प्रस्ताव रखा।२ अप्रेल १९६२ को दिल्ली में भारतीय ज्ञानपीठ और टाइम्स ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में देश की सभी भाषाओं के ३०० मूर्धन्य विद्वानों ने एक गोष्टी में इस विषय पर विचार किया।प्रस्तुत गोष्टी की दो सत्रों की अध्यक्षता डॉ.वी.राघवन और श्री.भगवतीचरण वर्मा ने की और इसका संचालन डॉ.धर्मवीर भारती ने किया।इस गोष्टी में काका कालेकर , हरेकृष्ण मेहताब , निसीम इजेकिल , डॉ.सुनीति कुमार चटर्जी , डॉ.मुल्कराज आनंद , सुरेंद्र मोहंती , देवेशदास , सियारामशण गुप्त , रामधारी सिंह 'दिनकर' ,उदय शंकर भट ,जगदीश चंद्र माथूर , डॉ.नगेन्द्र , डॉ.बी.आर.बोन्द्रे , जैनेंद्र कुमार , मन्मनाथ गुप्त और लक्ष्मीचंद्र जैन आदि प्रख्यात विद्वानों ने भाग लिया।१९६५ में पहले ज्ञानपीठ पुरसकार का निर्णय लिया गया।"

ज्ञानपीठ पुरस्कार का स्वरुप

" ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जानेवाला सर्वोच्च पुरस्कार है।"१ भारत कोई भी नागरिक जो भारतीय सविधान की आठवी अनुसूची लिखता हो इस पुरस्कार के योग्य है।पुरस्कार में ५ लाख रु.की धनराशि, प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा प्रदान की जाती है।

१९६५ में १ लाख रु.की पुरस्कार राशि से प्रारंभ हुए इस पुरस्कार को २००५ में ७ लाख रु. कर दिये गये है।२००५ के लिए चुने गए हिन्दी साहित्यकार कुँवर नारायण पहले व्यक्ति थे जिन्हें ७ लाख रु.का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ ।"२

१९६५ में प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार मलयालम लेखक जी.शंकर कुरुप को प्रदान किया गया था ।उस समय पुरस्कार की धराशि १ लाख रु थी ।१९८२ तक यह पुरस्कार लेखक की एक कृति के लिए दिया जाता था। १९८२ के बाद लेखक के भारतीय साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिए दिए जाने लगा।अब तक हिन्दी तथा कन्नड भाषा के लेखक सबसे अधिक ७ बार यह पुरस्कार पा चुके है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार : बांग्ला को ५ बार , मलयालम को ४ बार , उडिया , उर्दू , और गुजराती को ३ -३ बार , असमिया , मराठी , तेलगू , पंजाबी और तमिल को २-२ बार मिल चुका है।"३

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

वर्ष १९६५ से २०१३ तक के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त विभिन्न भाषाओं के रत्न

अ.क्र	साहित्यिकार का नाम	साहित्य	ज्ञानपीठ पुरस्कार का वर्ष
१	गोविन्द शंकर कुरुप	मलयालम	१९६५
२	ताराशंकर बंधोपाध्याय	बंगाली	१९६६
३	कुप्पाली वी गौडा पुटप्पा,उमाशंकर जोशी	कन्नड, गुजराती	१९६७
४	सुमित्रानंदन पंत	हिंदी	१९६८
५	फिराक़ गोरखपुरी	उर्दू	१९६९
६	विश्वनाथ सत्यनारायण	तेलगु	१९७०
७	विष्णु डे	बंगाली	१९७१
८	रामधारी सिंह 'दिनकर'	हिंदी	१९७२
९	दत्तात्रेय रामचंद्र बेन्द्रे,गोपीनाथ मोहंती	कन्नड,ओडिसा	१९७५
१०	विष्णु सखाराम खांडेकर	मराठी	१९७४
११	पी.वी.अकिलानंदम	तमील	१९७५
१२	आशापूर्णा देवी	बंगाली	१९७६
१३	कोटा शिवराम कारन्त	कन्नड	१९७७
१४	सच्चिदानंदन वात्स्यायनअज्ञेय	हिंदी	१९७८
१५	बिरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	असामिया	१९७९
१६	एस.के.पोत्ताकट	मलयालम	१९८०
१७	अमृता प्रीतम	पंजाबी	१९८१
१८	महादेवी वर्मा	हिंदी	१९८२
१९	मस्ती वेंकटेश अयंगार	कन्नड	१९८३
२०	तकाजी शिवशंकरा पिल्लै	मलयालम	१९८४
२१	पन्नालाल पटेल	गुजराती	१९८५
२२	सच्चिदानंदन राउतराय	बंगाली	१९८६
२३	विष्णु वामन शिरवाडकर कुसुमाग्रज	मराठी	१९८७
२४	सी.नारायण रेड्डी	तेलगु	१९८८
२५	कुर्अतुल ऐन हैदर	उर्दू	१९८९
२६	विनायक कृष्ण गोकाक	कन्नड	१९९०
२७	सुभाष मुखोपाध्याय	बंगाली	१९९१
२८	नरेश मेहता	हिंदी	१९९२
२९	सीताकांत महापात्र	ओडिसा	१९९३
३०	यु.आर.अनन्तमूर्ति	कन्नड	१९९४
३१	एम.टी.वासुदेव नायर	मलयालम	१९९५
३२	महाश्वेता देवी	बंगाली	१९९६
३३	अली सरदार जाफरी	उर्दू	१९९७

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

३४	गिरीश कर्नाड	कन्नड	१९९८
३५	गुरदयाल सिंह, निर्मल वर्मा	पंजाबी,हिंदी	१९९९
३६	इंदिरा रायसम गोस्वामी	असामिया	२०००
३७	राजेन्द्र शाह	गुजराती	२००१
३८	दण्डपाणि जयकान्तन	तमील	२००२
३९	गोविन्द विनायक करंदीकर	मराठी	२००३
४०	रहमान राही	कश्मिरी	२००४
४१	कुँवर नारायण	हिंदी	२००५
४२	रवीन्द्र केलकर,सत्यव्रत शास्त्री	कोंकणी,संस्कृत	२००८
४३	ओ.ऐन.वी.कुरुप	मलयालम	२००७
४४	अख़लाक़ मुहम्मद खान 'शहरयार'	उर्दू	२००८
४५	अमराकान्त,श्रीलाल शुक्ल	हिंदी	२००९
४६	चन्द्रशंखर कम्बार	कन्नड	२०१०
४७	प्रतिभा राय	ओरिया	२०११
४८	रावुरी भारद्वाज	तेलगु	२०१२
४९	केदारनाथ सिंह	हिंदी	२०१३

हिन्दी के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त रत्न

अ.क्र	साहित्यिकार का नाम	साहित्य/ रचना	ज्ञानपीठ पुरस्कार का वर्ष
१	सुमित्रानंदन पंत	चितम्बरा	१९६८
२	रामधारी सिंह 'दिनकर'	उर्वशी	१९७२
३	सच्चिदानंदन वात्स्यायन'अज्ञेय'	कितने नाव में कितनी बार	१९७८
४	महादेवी वर्मा	यामा	१९८२
५	नरेश मेहता	हिंदी	१९९२
६	महाश्वेता देवी	हिंदी	१९९६
७	कुँवर नारायण	हिंदी	२००५
८	अमराकान्त	हिंदी	२००९
९	श्रीलाल शुक्ल	हिंदी	२००९
१०	केदारनाथ सिंह	हिंदी	२०१३

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त केदारनाथ सिंह का साहित्यिक योगदान

केदारनाथ सिंह का जीवन परिचय : केदारनाथ सिंह का जन्म **१९३४** मे उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के **चकिया गाँव** मे हुआ था।उन्होने १९५६ में बनारस विश्वविद्यालय से एम.ए.और १९६४ में पी-एच.डी (हिन्दी) की उपाधि प्राप्त की।२०

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science

जून २०१४ को दैनिक जागरण में लिखा है कि - **"वे जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केंद्र में बतौर आचार्य और अध्यक्ष का काम कर चुके है।"**४उसी अखबार की पन्नो पर लिखा है कि, **"यह मेरा नहीं, काशी का सम्मान:केदारनाथ सिंह "**। केदारनाथ सिंह को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने हेतु **लाइव हिन्दुस्तान,जी न्यूज तथा बीबीसी के तारेंद्र किशोर ने २०,२१ जून २०१४ को** सम्मानपूर्वक कहा और लिखा है कि,- **"केदारनाथ सिंह हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। वे अज्ञेय द्वारा सम्पादित तीसरा सप्तक के कवि है। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा उन्हें वर्ष २०१३ का ४९ वां ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने का निर्णय किया गया।"१"वे यह पुरस्कार पाने वाले हिन्दी के १० वें लेखक हैं।"२/३**

केदारनाथ सिंह की साहित्य साधना :उन्होंने "अभी बिल्कुल अभी,जमीन पक रही है,यहाँ से देखो,बाघ,अकाल में सारस,उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ और तालस्ताय और साइकिल आदि कविता संग्रहों का निर्माण किया।"४ उनकी आलोचनाओं में प्रमुख है-"कल्पना और छायावाद,आधुनिक हिंदी कविता में बिंबविधान,मेरे समय के शब्द, और मेरे साक्षात्कारआदि। साथ ही सिंहजी ने ताना-बाना (आधुनिक भारतीय कविता से एक चयन),समकालीन रुसी कविताएँ।कविता दशक,साखी (अनियतकालिक पत्रिका),और शब्द (अनियतकालिक पत्रिका) आदि संपादनों का समावेश किया जाता है ।"५ केदारनाथ सिंह को अनेक पुरस्कारों से समान्नित किया है| बीबीसी हिन्दी ने २० जून २०१४ को केदारनाथ सिंह को प्राप्त पुरस्कारों की सूची देते हुए कहा कि,-**"मैथिलीशरण गुप्त सम्मान,कुमारन आशान पुरस्कार, जीवन भारती सम्मान, दिनकर पुरस्कार, अकादमी पुरस्कार और व्यास पुरस्कार आदि मिल चुके है।"६**

निष्कर्ष

अंत में निष्कर्ष के रुप में यह कहना अधिक उचित होगा कि, केदारनाथ सिंह द्वारा रचित साहित्य साधना हिंदी साहित्य के लिए संजिवनी साबित हुआ है। इसीलिए उनके कविता संग्रह , आलोचना और उनके संपादनों का अहमं कार्य को देखकर ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जानेवाला सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया है। इसीलिए हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं के विकास में उनका सबसे बडा योगदान रहा है ।

संदर्भ

१. केदारनाथ सिंह को ज्ञानपीठ पुरस्कार - लाइव हिन्दुस्तान,२० जून २०१४.

२. केदारनाथ सिंह को सर्वोच्च साहित्य सम्मान-जी न्यूज़, २० जून २०१४.

३. बीबीसी हिन्दी- तासेर किशोर-२१ जून २०१४.

४. दैनिक जागरण -२० जून २०१४.

५. बीब्रीसी हिन्दी-२० जून २०१४.

६. बीब्रीसी हिन्दी-२० जून २०१४.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad